# जैन विद्या भाग 4

## पाठ क्रमांक 1 ( महावीर प्रार्थना )

1. महावीर प्रार्थना के कोई दो पद लिखो?

महावीर तुम्हारे चरणों में, श्रद्धा के कुसुम चढ़ाएं हम।
ऊंचे आदर्शों को अपना, जीवन की ज्योति जगाएं हम।।

(1) तप संयममय शुभ साधन से ,आराध्य-चरण आराधन से।
बन मुक्त विकारों से सहसा , अब आत्म-विजय कर पाएं हम।।

(2) दृढ़ निष्ठा नियम निभाने में ,हो प्राण-बलि प्रण-पाने में।
मजबूत मनोबल हो ऐसा, कायरता कभी न लाएं हम।।

2. महावीर- प्रार्थना का चौथा पांचवा पद्य कौन -सा है?

(3) गुरुदेव शरण में लीन रहें,निर्भीक धर्म की बाट बहे।
अविचल दिल सत्य, अहिंसा का ,दुनिया को सुपथ दिखाएं हम।।

(4) प्राणी- प्राणी सह मैत्री हो ,ईर्ष्या, मत्सर ,अभिमान न हो ।
कहनी -करनी इकसार बना, 'तुलसी' तेरा पथ पाएं हम।।

3. यशलोलुपता, पद लोलुपता..... इस पूरे पद्य का अर्थ लिखो?

यश- लोलुपता पद- लोलुपता ,न सताए कभी विकार व्यथा।
निष्काम स्व -पर कल्याण काम ,जीवन अर्पण कर पाएं हम।।

अर्थ- हमारे मन में कभी भी यश प्राप्त करने और पद को प्राप्त करने की लालसा न हो और न ही कभी हम विकारों से व्यथित हों।हम निष्काम भाव से अपना कल्याण करें और दूसरों के कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पित कर सके।

## पाठ क्रमांक 2 ( युगप्रवर्तक भगवान् महावीर )

1. महावीर के जमाने में कौन-कौन सी बुराइयां थी जिनका उन्होंने विरोध किया?

महावीर के जन्म के समय लोग बुरी तरह अविद्या और रूढि से ग्रस्त थे। वह समय घोर अंधकार और भीषण अत्याचार से युक्त था ।उस युग में मानवता का कोई सम्मान नहीं था। जातिवाद को मुख्य रूप से प्रश्रय दिया जाता था। धर्म के नाम पर पशु बलि, मनुष्यों की बलि, यज्ञ पंचाग्नि आदि विविध उपक्रम किए जाते और ये सब कार्य मनुष्य के कल्याण के नाम पर किए जाते थे ।लोगों में प्रतिवाद करने की क्षमता क्षीण हो चुकी थी ।वे बिल्कुल विवश और असहाय थे। हिंसा ,घृणा ,विषमता ,पशु-बलि ,नारी की दयनीयता, दास्य प्रथा और ऊंच-नीच के दमनपूर्ण वातावरण को देखकर महावीर को असह्य वेदना हुई ।मनुष्य का उत्पीड़न उनको

एक गहरे अंधकार और आत्म शक्ति की विफलता का परिणाम लगा ।उन्होंने सर्वप्रथम अपनी आत्मा को उद्बुद्ध किया ।कठिन साधना कर वे अपने लक्ष्य तक पहुंचे और युगांतकारी परिवर्तन किए।

2. वर्ण व्यवस्था के बारे में महावीर के क्या विचार थे?

महावीर के अनुसार जन्म, जाति और वर्ण के आधार पर कोई ऊंचा नीचा नहीं होता। लघुता और महत्ता मनुष्य के आचरण और क्रिया कलापों पर निर्भर है। उच्च कुल में पैदा होकर भी यदि कोई व्यक्ति अकार्य करता है नाना प्रकार के व्यसन और अनैतिक कार्य करता है तो वह महान् और ऊंचा नहीं होता ।दूसरी ओर जाति से एक साधारण परिवार में उत्पन्न होकर जो आचारवान है ,मर्यादाओं का पालन करता है ,आत्म- धर्म के पथ पर चलता है, वास्तव में वही बड़ा और महान् है। विकार, विलास ,आलस्य और शोषण आदि अवगुणों को आश्रय देने वाला व्यक्ति कभी भी श्रेष्ठ और ज्येष्ठ नहीं होता ,चाहे वह कहीं भी उत्पन्न हो। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति परंपरा से नहीं कर्म श्रृंखला से है ।इस प्रकार महावीर ने वर्ण व्यवस्था का पूर्णतया विरोध किया।

3. नारी को महावीर ने अपने संघ में क्या स्थान दिया?

नारी को करुणा और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति कहा जाता है ।जगत् जननी के रूप में जिस की पूजा की जाती है महावीर के समय स्त्रियों की दशा बहुत निम्न और उपेक्षित थी ।स्त्री को दासी के रूप में माना जाता ।उसे किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं थी ।लोग स्त्री को मात्र अपनी वासना पूर्ति का साधन मानते थे ।महावीर ने स्त्री समाज को इस पतित और असहाय अवस्था से उबारा ।उन्होंने स्त्री समानता की बात कही। चंदनबाला जैसी महान् स्त्री को दास प्रथा की बेड़ियों से मुक्त करवाकर महावीर ने नारी जाति के पुनरुत्थान का विशेष और सफल कदम उठाया ।महावीर ने बिना किसी संकोच के स्त्रियों को अपने संघ में शामिल किया ।उन्हें साधुओं के समान और आत्म विकास, दान, विहार आदि की स्वतंत्रता देकर एक साहसिक कदम उठाया।

4. महावीर ने धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक तीनों ही क्षेत्रों में परिवर्तन हेतु क्या कदम उठाए?

महावीर ने धार्मिक क्षेत्र में हिंसा के विरोध का कदम उठाया ।"सव्वेसिं जीवियं पियं "अर्थात् जीवन सबको प्रिय है ,मरना कोई नहीं चाहता ।यह कहकर उन्होंने हिंसा को अमानवीय कर्म व अधर्म बतलाया है।

महावीर ने दूसरा कदम सामाजिक परिवर्तन का उठाया। जिसमें उन्होंने दास प्रथा का विरोध किया। उन्होंने कहा -मनुष्य सब समान है ,उनको दास बनाना मानवता की अवज्ञा है ।

उन का तीसरा कदम इच्छा निरोध का था ,जो कि अर्थ क्षेत्र पर प्रभाव डालने वाला था ।महावीर के विचार से आत्मशांति भोग सामग्री की संपन्नता पर निर्भर नहीं है,उसका रास्ता संतोष और आत्म संयम है।

## पाठ क्रमांक 3 ( कलि काल सर्वज्ञ आचार्य हेमचंद्र )

1. हेमचंद्र आचार्य का मूल नाम क्या था?

आचार्य हेमचंद्र का मूल नाम चंगदेव था।

2. उनको जब आचार्य पद दिया गया उस समय उनकी उम्र क्या थी?

21 वर्ष की लघुवय मे ही उन्हें आचार्य पद दे दिया गया।

3. राजा कुमारपाल आचार्य हेमचंद्र से क्यों प्रभावित हुए?

आचार्य हेमचंद्र ने कुमारपाल को 7 वर्ष पूर्व ही बता दिया था कि तुम एक प्रभावशाली राजा बनोगे। इसके अतिरिक्त आचार्य हेमचंद्र ने राजा कुमारपाल के प्राणों की रक्षा की, तभी से वे उन से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना परम उपकारी व श्रद्धेय मानने लगे।

4. आचार्य हेमचंद्र के सामने कितनी कलमें चलती थी?

आचार्य हेमचंद्र के सम्मुख 84 कलमें चलती थी।

5. आचार्य हेमचंद्र के जीवन परिचय का संक्षिप्त में वर्णन करें।

जैन शासन में अनेक प्रभावक आचार्य हुए हैं, जिनमें आचार्य हेमचंद्र का महत्वपूर्ण स्थान है।

**जन्म व परिवार**

हेमचंद्र का जन्म स्थल गुजरात का धंधुका ग्राम है। उनके पिता का नाम चाचदेव व माता का नाम पाहिनी था। कालांतर में उनके एक लड़का हुआ जिसका नाम चंगदेव रखा गया ।

**दीक्षा**

आचार्य देवचंद्र सूरि 'धन्धुका'ग्राम में पधारे। पाहिनी बेटे को लेकर गुरु दर्शन के लिए गई ।तब आचार्य देवचन्द्र सुरि ने पाहिनी से पुत्र रत्न को अर्पित करने के लिए कहा। तब पाहिनी ने कहा मेरे जीवन का आधार इकलौता लाल ही है। आचार्य देवचंद्र सूरि ने मोह का निवारण करते हुए पाहिनी से कहा तुम्हारा पुत्र होनहार और विलक्षण है।यह पुत्र जगत् का कल्याणकारक बनेगा। इससे जैन शासन की प्रभावना होने वाली है। माता ने जैन शासन के गौरव के लिए अपने पुत्र को देवचंद्र सूरि को अर्पित कर दिया ।आचार्य श्री ने चंगदेव को दीक्षित कर उनका नाम सोमचंद्र रखा।

**विशेषताएं**

सोमचंद्र की प्रतिभा अत्यंत सूक्ष्म ,प्रखर तथा प्रसरणशील थी ।ज्ञानाराधना के साथ साथ चारित्र धर्म, क्षमा, सहनशीलता ,सरलता, पवित्रता ,विनयशीलता आदि गुणों की भी सम्यक् आराधना की ।

**सूरि पद**

आचार्य श्री ने मुनि सोमचंद्र को 21 वर्ष की लघुवय में सुरिपद (आचार्यत्व)से विभूषित कर उनका नाम हेमचंद्र सूरि रखा ।

अनेक राजाओं पर आचार्य हेमचंद्र का प्रभाव

राजा सिद्धराज व राजा कुमारपाल पर आचार्य हेमचंद्र की समन्वयकारक नीति का सुंदर असर पड़ा। उन्होंने जीववध, सप्तव्यसन वर्जन आदि का राज्यव्यापी प्रचार करवाया।

**जैन शासन की अभूतपूर्व सेवा :-**

आचार्य हेमचंद्र को जनता ने कलिकाल सर्वज्ञ तथा गुजरात सर्वज्ञ के रूप में सम्मानित किया ।क्योंकि उन्होंने करीब साढ़े तीन करोड़ पद्यों से भी अधिक साहित्य निर्माण कर जैन शासन की अभूतपूर्व सेवा की ।किवदंती भी है कि आचार्य हेमचन्द्र के सम्मुख एक साथ 84 कलमें चलती थी।योगशास्त्र आचार्य हेमचंद्र का योग संबंधी प्रसिद्ध ग्रंथ है।

**स्वर्गवास**

आचार्य हेमचन्द्र सुरि का स्वर्गवास विक्रम संवत् 1221 में 84 वर्ष की दीर्घ आयु में हुआ।

गुजरात राज्य में जैन संस्कार आज भी जन जन के जीवन मैँ मुखरित है।

## पाठ क्रमांक 4 ( आचार्य भिक्षु एक क्रांत दृष्टा आचार्य )

1. नवीन संघ के समुचित संरक्षण के लिए आचार्य भिक्षु ने कौन-कौन से काम विशेष रुप से किए?

नवीन संघ के समुचित संरक्षण करने के लिए आचार्य भिक्षु ने विशेष रूप से तीन काम किए-

**मूल्यों की स्थापना -**

आचार्य भिक्षु ने दान-दया और सेवा के क्षेत्र में नई स्थापना की। उस समय लोगों की यह मान्यता थी कि जैसे तैसे दान देना धर्म है ,स्वर्ग मोक्ष का मार्ग है, उचित या अनुचित रुप से किसी को बचाना दया है, धर्म है। इसके विपरीत आचार्य भिक्षु ने कहा कि दान दया और धर्म सामाजिक अपेक्षाएं हैं इनको आत्मधर्म मान लेना भयंकर भूल है। चीटियों के बिल पर आटा डालने, बूचड़खाने में रुपए देकर हिंसा बंद करवाना, हिंसा को प्रोत्साहन देना ही है। यह हिंसा छुड़वाने का उचित तरीका

नहीं है ।किसी भी हिंसक को हिंसा का दुष्परिणाम बताकर अहिंसक बनाना ही वास्तविक दया है।

**संघ संगठन-**

स्वामी जी ने समूचे संघ को एक सूत्र में बांधने का ऐतिहासिक कदम उठाया। किसी भी संघ को व्यवस्थित रखने के लिए एकता का होना बहुत जरूरी है ।संघ की विश्रृंखलता का एक कारण होता है- शिष्य लोलुपता आचार्य भिक्षु ने इस पर सीधा प्रहार किया और शिष्य परंपरा का लोप ही कर दिया ।उन्होंने ऐसा विधान बनाया की समस्त साधु साध्वी एक आचार्य के निर्देश में रहे कोई अपना पृथक् शिष्य न बनाएं।

**साहित्य सृजन-**

अनेक विरोधों और संघर्षों के बावजूद आचार्य भिक्षु की लेखनी निरंतर चलती रही। अपने जीवन काल में 38000 पद्य परिमाण रचना करके राजस्थानी साहित्य को समृद्ध कर दिया।

2. आचार्य भिक्षु ने साधु- साध्वियों को क्या शिक्षा दी थी?

अंतिम शिक्षा देते हुए स्वामी जी ने साधु- साध्वियों को फरमाया कि "तुम सब मुझे जैसा समझते हो वैसा ही भारमल जी को समझना।" प्रत्येक कार्य इनकी आज्ञा से करना। अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहना और आचार विचार को मजबूत रखना। सभी साधु -साध्वी परस्पर सौहार्द से रहें।दीक्षा देते समय सजग रहना ।हर किसी को मूंडने का प्रयास मत करना ।साधना की कसौटी पर जो खरा उतरे उसे ही दीक्षा देना।

3. आचार्य भिक्षु के जीवन पर प्रकाश डालो?

आचार्य भिक्षु का जन्म विक्रम संवत्1783 में राजस्थान के कंटालिया ग्राम में हुआ । पिता का नाम बल्लू जी तथा माता का नाम दीपां बाई था।भीखणजी बचपन से ही एक प्रतिभाशाली बालक थे ।युवावस्था में ही वे अपनी पत्नी के साथ विरक्त होकर संयम ग्रहण करने को तत्पर हो गए। पत्नी के अचानक देहावसान हो जाने पर उन्होंने अपनी माता से दीक्षा की अनुमति मांगी।

मां के अनुमति न देने पर आचार्य भिक्षु ने अपने गुरु स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्य रुघनाथ जी से मां का संपर्क करवाया। दीपां बाई ने रुघनाथजी से कहा - जब यह गर्भ में आया तब मैंने सिंह का स्वप्न देखा। मेरा बेटा राजा बन कर सिंह की तरह गूंजेगा ।मैं इसे कैसे दीक्षा दूं ?रुघनाथ जी के समझाने पर माता ने दीक्षा की अनुमति दे दी ।दीक्षा के बाद आचार्य भिक्षु रुघनाथ जी के अत्यंत प्रिय शिष्य बन गए ।उन्होंने अपना सारा वात्सल्य आचार्य भिक्षु पर ऊड़ेल दिया।8 वर्ष तक वे अपने गुरु के साथ ही रहे

दीक्षा लेते ही भीखण जी ने शास्त्रों का मंथन करना प्रारंभ कर दिया ।थोड़े ही वर्षों में जैन शास्त्रों के पारंगत पंडित बन गए। विक्रम संवत् 1815 में आपके मन मैं

साधुओं के आचार- विचार संबंधी शिथिलता के प्रति क्रांति उत्पन्न हुई। आपने अपने क्रांति पूर्ण विचारों को लेकर अपने गुरु के साथ विस्तृत वार्ता की।

संतोषजनक निर्णय न मिलने पर विक्रम संवत् 1817 में बगड़ी में अपने गुरु रुघनाथ जी से पृथक् हो गए ।भीखण जी ने पहला पड़ाव श्मशान में जैतसिंह की छतरियों में किया।

आचार्य भिक्षु को अनेक विरोधों का सामना करना पड़ा ।

लेकिन वे अपने पथ से विचलित नहीं हुए ।विक्रम संवत्1817 आषाढ शुक्ला 15 को केलवा में आपने पुनः शास्त्र सम्मत दीक्षा ग्रहण की ।15 वर्ष तक कठोर साधना और तप करते रहे।

विक्रम संवत् 1832 में आपने अपने उत्तराधिकारी के रूप में प्रमुख शिष्य भारमल जी का चयन किया और संघीय मर्यादाओं का सूत्रपात किया।

विक्रम संवत् 1860 में भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी के दिन आपका समाधि पूर्वक देहावसान हो गया। उस समय आपकी आयु 77 वर्ष थी ।आप के शासनकाल में 48 साधु और 56 साध्वियां दीक्षित हुई ।

स्वामी जी का पूरा जीवन सक्रिय और पुरुषार्थी था।उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

4. राज नगर की घटना का संक्षेप में उल्लेख करें?

राजनगर के श्रावक साधुओ के आचार- विचार के बारे मे संदिग्ध हो गए। और उन्होंने साधुओं को वंदना और नमस्कार करना छोड़ दिया ।इस बात से आचार्य रुघनाथ जी बहुत चिंतित हुए। उन्होंने अपने प्रिय और विश्वास पात्र शिष्य मुनि भीखण जी को श्रावकों को समझाने के लिए भेजा ।उनके साथ मुनि भारमल जी ,हरनाथ जी ,टोकर जी और वीर भाण जी थे ।मुनि भीखण जी ने राजनगर पहुंचकर श्रावकों से सारी बात की। भिक्षु स्वामी ने अनुभव किया कि श्रावकों की बातें सत्य हैं फिर भी आचार्य और संघ की बात रखने के लिए उन्होंने अपनी प्रतिभा के द्वारा उनको समझा दिया ।उसी रात्रि में वे भीषण ज्वर से पीड़ित हो गए। स्वामी जी बेचैन हो गए। वे सोचने लगे कि मैने सबकी सही बातों को झुठलाया है

यदि इस समय आयुष्य का बंध हो जाए तो मेरी क्या गति होगी? उन्होंने मन ही मन संकल्प किया कि ज्वर पीड़ा से मुक्त होने पर मैं पुनः प्रत्येक पहलू पर सही चिंतन कर तथ्यों को प्रकाश मे लाऊंगा। इसी चिंतन के साथ ही उनका ज्वर कम होता गया। प्रातःकाल जब श्रावक वंदना करने के लिए आए तो स्वामी जी ने कहा "कल मैंने तुम लोगों को जो निर्णय दिया था उसे अंतिम निर्णय मत समझना ।मैं

शास्त्रों का अध्ययन करके तुम्हें फिर सही तथ्य बताऊंगा। स्वामी जी का आश्वासन सुनकर श्रावक संतुष्ट हो गए।

## पाठ क्रमांक-5 ( आचार्य कालूगणी पुण्यवान् आचार्य )

1. कालूगणी की दीक्षा कब व किसके हाथों हुई ?

कालूगणी की दीक्षा विक्रम संवत् 1944 आश्विन शुक्ला तृतीया को बीदासर में आचार्य मघवागणी के हाथों हुई।

2. कालूगणी ने संघ में किन किन बातों का विकास किया था? अपने शब्दों में व्यक्त करो।

कालुगणी के युग में श्रमण वर्ग, क्षेत्र ,पुस्तकें,कला आदि के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

**(1) श्रमण वर्ग-**

कालू गणी से पहले किसी भी आचार्य के समय साधुओं की संख्या 80 से ऊपर नहीं हुई।कालूगणी के युग में यह संख्या बढ़ कर 139 तक हो गई। श्रावक वर्ग में भी उनके समय में अपेक्षाकृत जागृति, दृढ़ता का भाव और धर्म के प्रति श्रद्धा के भाव अधिक विकसित हुए।

**(2) पुस्तक भंडार-**

कालूगणी को पुस्तकों से बहुत अभिरुचि थी। उन्हें जहां कहीं भी पुस्तक भंडार का पता चलता वे मंत्री मुनि को उस का निरीक्षण करने भेज देते।

उनके समय में संघ का पुस्तक भंडार समृद्ध होने का यही कारण था। आचार्य भिक्षु को भगवती सूत्र की एक प्रतिलिपि भी बहुत समय की प्रतीक्षा और प्रयास से मिली। वहीँ कालूगणी के समय भगवती सूत्र की 36 प्रतियां उपलब्ध हुई।

**(3) कला विकास-**

कालूगणी को कला से विशेष प्रेम था । उनके समय में साधुओं के वस्त्र, पात्र , रजोहरण आदि उपकरणों में एक ऐसी सुरुचिपूर्णता का उद्भव हुआ ,जो दर्शकों के आकर्षण का कारण बना। इसमें नरेटी को घिसकर बनाई गई टोपसी , सूत को गुंथकर बनाई गई माला, कांटा निकालने के लिए काठ से बनाई गई चिमटी मुख्य है।

**(4)लिपि सौक्षम्य -**

लिपिकला के क्षेत्र में भी कालूगणी के समय अद्भुत विकास हुआ। अनेक संतो के सुंदर अक्षर मोती का सौंदर्य लिए पत्रों पर उतरने लगे ।मुनि कुंदनमल जी (जावद)ने एक पत्र में लगभग ढाई हजार श्लोक(80000अक्षर) लिख कर सबको

विस्मित कर दिया ।समग्र उत्तराध्ययन सूत्र और व्यवहारचुलिका उस एक लघुकाय पत्र में ही समा गई।

**(5)क्षेत्र विस्तार-**

कालूगणी के युग में तेरापंथ का क्षेत्र विकास भी हुआ ।कालूगणी ने ही सर्वप्रथम संतो को मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र आदि सूदूर प्रांतों में भेजा।

**(6)संस्कृत का विकास-**

जयाचार्य के संस्कृत पठन की प्रवृत्ति को मघवा गणी आगे बढ़ाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कालू गणी को उपयुक्त पात्र समझा ।लेकिन उस समय संस्कृत पठन दुःसाध्य था। निस्पृहभाव से विद्या दान देने वाले पंडितों का अभाव सा था । कालुगणि जैसे योगी और दृढ संकल्पी व्यक्ति ने उस असहज कार्य को सहज बना दिया।

पंडित घनश्याम दास जी व पंडित रघुनंदन जी शर्मा का योग कालूगणी की परिश्रमशीलता और प्रेरणा तथा युवक साधुओं की अध्ययन शीलता इन सबके समन्वित रूप ने ही तेरापंथ को विद्या के क्षेत्र में आगे ला दिया ।इस प्रकार कालुगणी ने अपने संघ में सभी क्षेत्रों में विकास करने का अथक प्रयास किया।

3. पिस्तौल गिर पड़ी इस घटना को अपने शब्दों में बताएं।

विक्रम संवत् 1979 का कालूगणी का चातुर्मास बीकानेर में था। तेरापंथ के आचार्यों का बीकानेर में प्रथम चातुर्मास ही था। विरोधी लोगों को वह बहुत अखरा और उन्होंने प्रबल विरोध करना प्रारंभ कर दिया ।जब विरोध से बात नहीं बनी तो उन्होंने कालूगणी की हत्या करने का षड्यंत्र रच डाला।

बीकानेर के बाहर काफी दूरी में बने मिट्टी के बड़े-बड़े ढुह(धोरे) में साधु-जन शौचादि के लिए जाया करते थे ।षड्यंत्रकारियों ने कालूगणी को वहां अपना लक्ष्य बनाने का निश्चय किया ।उन्होंने एक व्यक्ति को प्रलोभन देकर इस कार्य को अंजाम देने की योजना बनाई। प्रतिदिन की तरह जब कालू गणी स्थंडिल भूमि की ओर पधारे ,तब वह व्यक्ति हाथ में पिस्तौल लिए आगे बढ़ा। उस समय कालू गणी अकेले ही थे ।कालू गणी की सहज स्नेह दृष्टि का उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा की उसके तन मन दोनों धूजने लगे और पिस्तौल उसके हाथ से नीचे गिर पड़ी। कालू गणी ने जब उस अज्ञात व्यक्ति से पूछा कि क्या बात है ?तब वह व्यक्ति कालूगणी के चरणों में गिर कर क्षमा याचना करने लगा ।उसने कहा-मैं इतना कमीना नहीं हूं कि चंद चांदी के टुकडे के लिए आप जैसे देव पुरुष की हत्या कर दूं ।अपने कृत्य पर पश्चाताप करता हुआ वह अपने घर चला गया। कालूगणी गंभीर पुरुष थे। उन्होंने इस घटना का श्रावकों के सामने तो क्या बहुत दिनों तक साधुओं के सामने भी उल्लेख नहीं किया।

4. कालुगणी के शासनकाल में साधुओं की संख्या कितनी थी?

कालूगणी के शासनकाल में संघ में साधुओं की संख्या 155 थी।

# पाठ क्रमांक 6 ( तेरापंथ को आचार्य तुलसी की देन )

1. आचार्य तुलसी जब पदासीन हुए उस समय उनकी उम्र क्या थी?

22 वर्ष।

2. आचार्य तुलसी ने पदासीन होते ही कौन सा कार्य हाथ में लिया?

तेरापंथ धर्म संघ में साध्वियों की संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही है। वृद्धि के साथ साथ उनके विशेष अभ्युदय की अपेक्षा थी ।कालूगणी ने अपने उत्तराधिकारी आचार्य तुलसी को संघ के भावी कार्यक्रम का संकेत देते हुए निर्देश दिया कि अपने संघ में साध्वियां तो बहुत है लेकिन उनके विकास हेतु कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है,तुम्हें इस ओर विशेष ध्यान देना है ।कालूगणी के निर्देशानुसार आचार्य पद पर पदासीन होते ही कुछ समय बाद साध्वियों के अध्ययन का कार्य शुरु कर दिया। आज साध्वी समाज का जो रुप बन पाया है उसका पूरा श्रेय आचार्य श्री तुलसी के कर्तृत्व को मिलता है।

3. तेरापंथ समाज को आचार्य श्री की कौन-कौन सी देन है संक्षेप में बताओ?

**शिक्षा का विकास-**

उस समय तेरापंथ धर्म संघ में शिक्षा का यथेष्ट विकास नहीं हुआ था। विचार अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र राजस्थानी भाषा थी। कालूगणी के युग में संस्कृत भाषा में बोलने और लिखने का काम तो शुरू हो गया था फिर भी सर्वांगीण विकास की दिशाएं नहीं खुली थी। आचार्य तुलसी ने अनुभव किया कि यदि हमारे साधु-साध्वियां प्रबुद्ध नहीं होंगे तो समाज को क्या दे पाएंगे ?तेरापंथ में शिक्षा का अभ्युदय हुआ ।हिंदी, संस्कृत, प्राकृत ,अंग्रेजी आदि विशिष्ट भाषाओं के लिखने बोलने का अभ्यास प्रारंभ हो गया ।दो दशकों में ही तेरापंथ संघ का शैक्षणिक स्तर उन्नत हो गया।

**साध्वी समाज का विकास-**

साध्वी समाज में आज जो दिख रहा है उसका पूरा श्रेय आचार्य श्री तुलसी को है ।उनके अथक प्रयत्न का ही फल है आज न केवल शिक्षा में अपितु साधना, कला, साहित्य ,वक्तृत्व आदि सभी विद्याओं में साध्वियां गतिशील है।

**साहित्य सेवा-**

तेरापंथ धर्म संघ की साहित्यिक चेतना का उर्ध्वारोहण करने में आचार्य तुलसी ने एक कीर्तिमान स्थापित किया है।आप में सृजन की अद्भुत क्षमता थी। राजस्थानी ,हिंदी ,संस्कृत आदि भाषाओं में रचित साहित्य मे शाश्वत मूल्यों की झलक मिलती है।

आचार्य श्री ने मौलिक साहित्य सृजन के साथ-साथ ऐसे साहित्यकारों को तैयार किया जिनकी कृतियों ने बौद्धिक मानस को प्रभावित किया

गद्य और पद्य दोनों धाराओं में साहित्य का सृजन आचार्य श्री की विलक्षण सृजन शक्ति को दर्शाता है।

**आगम संपादन-**

विक्रम संवत् 2012 में आचार्य श्री ने आगमों के सुव्यवस्थित और प्रामाणिक संपादन का संकल्प लिया ।इसके लिए आपने साधु-साध्वियों की एक टीम बनाई। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी इस कार्य के वाचना प्रमुख तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी इसके प्रधान संपादक थे ।आप दोनों के नेतृत्व में आगम कार्य सतत् गतिशील रहा।

**महिला जागरण-**

महिला चेतना को जागृत करने और उन्हें अपने अस्तित्व का बोध कराने के लिए आचार्य श्री ने नया मोड़ अभियान चलाया। और उस के माध्यम से जीर्ण शीर्ण और रुढि परंपराओं को तोड़ने का आह्वान किया ।आज महिलाएं अनेक कुरूढियों से मुक्त हो चुकी है। आज वे इतनी सक्षम हो चुकी है कि कुछ क्षेत्रों में पुरुषों का भी पथ दर्शन करने की क्षमता रखती है।

**युवा शक्ति का नियोजन-**

आपने धार्मिक अवस्था से भटके हुए युवकों को एक दिशा दी ।उन्हें अपने दायित्व के प्रति सजग किया ।आप की प्रेरणा से हजारों युवकों में धर्म के प्रति धारणाओं में परिवर्तन आया ।नैतिक मूल्यों के प्रति उनका दृष्टिकोण बना और उनके चारित्रिक मूल्यों में भी अभिवृद्धि हुई।

**अणुव्रत आंदोलन-**

अणुव्रत राष्ट्रीय चरित्र को उन्नत बनाने का एक सफल एवं सशक्त उपक्रम है ।आपने व्यापक स्तर पर नैतिकता को प्रतिष्ठित करने का आह्वान किया। आज तेरापंथ की जो छवि राष्ट्र की प्रबुद्ध जनता के सामने है उसका श्रेय अणुव्रत आंदोलन को है, जो आचार्य तुलसी के उर्वर मस्तिष्क की देन है ।आचार्य श्री के इस योगदान को आंकते हुए उन्हें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया
आचार्य तुलसी के इन योगदानों के कारण ही उनका शासनकाल अपूर्व और विलक्षण था।

4. जैन विश्व भारती के बारे में आप क्या जानते हैं?

आचार्य तुलसी के शासनकाल की एक विशिष्ट उपलब्धि है -जैन विश्व भारती। यह उच्च शिक्षा ,साधना ,शोध , संस्कृति और सेवा के क्षेत्र में एक साथ काम कर रही है। जैन तत्वज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए इसके शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय द्वारा प्रतिवर्ष नियमित परीक्षाएं आयोजित की जाती है। शोध के क्षेत्र में आगम संपादन का महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है।यहां पर स्थित तुलसी अध्यात्म नीडम् ,प्रेक्षा ध्यान, योग साधना आदि के लिए साधकों को व्यवस्था प्रदान करता है। जैन संस्कृति ,इतिहास को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाली" तुलसी कला प्रेक्षा" भी अनुपम है और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है।

5. जैनों का पहला विश्वविद्यालय कौनसा है?

जैन विश्व भारती के अंतर्गत "जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय की स्थापना हुई जो भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय है।यही जैनों का प्रथम विश्वविद्यालय है।

6. महिला जागरण के क्षेत्र में आचार्य श्री तुलसी का योगदान लिखे?

आचार्य श्री तुलसी हमारे धर्म संघ के ऐसे मनस्वी, यशस्वी आचार्य हुए हैं जिन्होंने महिला जागरण के लिए क्रांतिकारी परिवर्तन किए जो आज की नारी में परिलक्षित होते हैं।

उन्होंने महिला शक्ति को जागृत करते हुए "नया मोड़" के माध्यम से पुरानी रूढ़िवादी परंपराओं को तोड़ने का सफल प्रयास किया ।

आज की सुव्यवस्थित, सुघड़ नारी का जो रुप हमारे सामने है वह आचार्य तुलसी की ही देन है। आचार्य श्री तुलसी ने महिलाओं को शिक्षित, सुगठित, शक्तिशाली एवं स्वावलंबी बनाया और पर्दा प्रथा बालविवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उन्होंने साध्वी समाज की शिक्षा -दीक्षा पर बल दिया और साध्वी समुदाय को धर्म संघ में एक विशिष्ट पहचान दिलाई ।

उन्होंने नारी को अबला से सबला बना दिया और समाज की कुरीतियों को कुठाराघात करते हुए नारी को स्वतंत्रता दिलाई थी। इतना ही नहीं आज तो नारी पुरुषों के प्रदर्शन में बहुमूल्य भूमिका निभा रही है ।

अनेक संगठनों के माध्यम से नारी समाज में ऊर्जा का संचार कर रही है ।यह आचार्य श्री तुलसी की ही देन है।

## पाठ क्रमांक 7 ( मनीषी आचार्य महाप्रज्ञ )

1. आचार्य महाप्रज्ञ जी के माता-पिता के नाम बताओ।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के पिता का नाम तोलारामजी और माता का नाम बालूजी था।

2. आपके शिक्षा गुरु और दीक्षा गुरु कौन थे?

आपके शिक्षा गुरु मुनि तुलसी (आचार्य तुलसी) और
दीक्षा गुरु आचार्य कालूगुणी थे।

3. आचार्य श्री की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख करो।

1 आचार्य महाप्रज्ञ जी विविध रुप व्यक्तित्व के धनी थे, इनका एक रूप योगी का तो दूसरा रूप मनस्वी का, एक रूप गुरु का तो दूसरा रूप अनुशास्ता का था ।इन्होंने मौलिक साहित्य स्रष्टा और अन्वेषक के रूप में अपनी पहचान बनाई ।

2 आचार्य महाप्रज्ञ संस्कृत में आशुकवि थे ।वे हिंदी, प्राकृत और संस्कृत भाषा के विशेषज्ञ थे ।अपने आशु कवित्व के द्वारा इन्होंने अनेक विद्वानों को आश्चर्यचकित कर दिया था।

3 आगम संपादन करने का एकमात्र श्रेय आचार्य महाप्रज्ञ जी को ही जाता है। आचारांग पर संस्कृत में भाष्य लिखकर इतिहास को दोहराया है।

4 .आचार्य श्री के जैन दर्शन के प्रतिनिधि ग्रंथों के नाम बताओ।

जैन दर्शन के प्रतिनिधि ग्रन्थों के नाम

जैन दर्शन :मनन और मीमांसा, जैन न्याय का विकास, अहिंसा- तत्व- दर्शन, महावीर का पुनर्जन्म ,श्रमण महावीर आदि ग्रन्थ जैन दर्शन के प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

4. आचार्य महाप्रज्ञ जी जैन आगमों के प्रशस्त व्याख्याकार थे।स्पष्ट कीजिये।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ आगम संपादन कार्य के प्रधान- निर्देशक ,संपादक ,और विवेचक थे।आपकी कर्तव्यनिष्ठा और श्रम परायणता ने इस कार्य को बहुत आगे बढ़ाया। 11अंग, 12उपांग ,मूल, और छेद सभी 32 आगमों के पाठ संपादित किये । अनेक आगमों की संस्कृत, छाया, हिंदी अनुवाद और टिप्पण भी प्रकाश में लाये। समूचा जैन संघ इनका चिरऋणी रहेगा ।सारा आगम साहित्य आपकी निर्मल मेधा में प्रतिबिम्बित था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक महान् भाष्यकार थे।जिन्होंने आचारांग पर संस्कृत में भाष्य लिखकर एक नयी विधा का श्री गणेश किया।

## पाठ क्रमांक 8 ( मंत्री मुनि की विशेषताएं )

1. तेरापंथ में मंत्री मुनि का क्या स्थान था?

मंत्री मुनि मगन लाल जी का ऐतिहासिक जीवन तेरापंथ के इतिहास में बहुत महत्व रखता है। तेरापंथ धर्म संघ में उन्हें जैसा सम्मान मिला, संभवतःआज तक किसी को नहीं मिला ।वे शासन के स्तंभ थे। उनकी इच्छा का मान स्वयं आचार्य भी करते थे।

2. उनके जीवन में क्या-क्या विशेषताएं थी?

मंत्री मुनि के जीवन में अनेक विशेषताएं थी-

1. उनकी गण निष्ठा और गंभीरता अपूर्व थी।

2. गणी के प्रति उनके जैसा विनय भाव देखने को कम मिलता है।

3.उनमें बात को पचाने की विलक्षण शक्ति थी।

4. सब के प्रति समभाव रखना उनके जीवन का सहज सूत्र था।

5. वे साहसी थे।

6. उनकी गुरु भक्ति अद्वितीय थी।

7. उनमें अथाह सहनशीलता थी । वे कहा करते थे -जीवन सहने के लिए है कहने के लिए नहीं।

8. उनका सारा जीवन 5 आचार्यों की सेवा में ही बीता था।

9. वे आचार्य प्रवर द्वारा दी गई बख्शीसों को काम में नहीं लेते थे वरन् सिर पर चढ़ाकर रखते थे।

10. मंत्री मुनि एक सहजयोगी थे।

11. वे गुणानुरागी थे सभी के गुणों का आदर करते थे।

12. अहंकार उनको कभी छू न सका ।वे कहते हम किस बात का घमंड करें? हमें रोटी के लिए हाथ पसारना पड़ता है।
उनकी विशेषताओं को आज भी याद किया जाता है।

3. उन्होंने कितने आचार्यों का शासन काल देखा?

उन्होंने 5 आचार्यों(मघवा गणि से आचार्य तुलसी) का शासन काल देखा।

4. उनके जीवन की कोई घटना अपने शब्दों में बताओ?

मंत्री मुनि तेरापंथ शासन के स्तंभ थे। उन्होंने हमेशा अपने आप को एक साधारण साधु की तरह ही समझा ।एक बार एक श्रावक ने आचार्य श्री से अपनी सिफारिश करवाने के लिए मंत्री मुनि को बार बार निवेदन किया ।लेकिन मंत्री मुनि का उत्तर था-" मैं क्या कर सकता हूं? गुरुदेव से प्रार्थना करो ।"श्रावक ने कहा- महाराज! सारा काम आपके हाथ में ही है ,आप चाहे जैसा कर सकते हैं। मंत्री मुनि ने बड़े विनोद भाव से कहा -मेरे हाथ में मेरा गेडिया है।

## पाठ क्रमांक 9 ( सत्यनिष्ठ बालमुनि कनक )

1. दीक्षा के समय मुनि कनक की क्या अवस्था थी?

दीक्षा के समय मुनि कनक की अवस्था 11 वर्ष थी।

2. कन्हैयालाल जी ने कनक मुनि से घर जाने के लिए क्या कहा?

कन्हैयालाल जी ने अपने पुत्र मुनि कनक से कहा कि हमें घर चलना चाहिए । जिस उद्देश्य से हम दीक्षित हुए हैं ,वह यहां पूरा नहीं होता ।साधना तो हम घर पर भी कर सकते हैं।

3. बाल मुनि कनक के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है?

मुनि कनक के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने संघ एवं संघपति के प्रति अटूट श्रद्धा एवं आस्था बनाए रखना चाहिये ।
उनके प्रति हमारा सच्चा समर्पण और विनय भाव रहना चाहिए।
कठिनाई आने पर विचलित नहीं होना चाहिए।
दीक्षित व्यक्तिआचार्य को ही सर्वस्व माने ।

गण में किसी साधु में दोष लगे तो उसे प्रचारित नहीँ करें अपितु उन्हे समझाने का प्रयत्न करें अथवा गुरु को बता दे ।

हमें अपने निर्णय पर अटल रहना चाहिए एवं कष्टो से घबराना नहीं चाहिए।

दृढ़ इच्छाशक्ति और मनोबल के साथ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

4. मुनि कनक की दीक्षा कहां एवं किनके हाथों हुई?

मुनि कनक की दीक्षा विक्रम संवत् 1995 कार्तिक शुक्ला तृतीया को सरदारशहर में आचार्य तुलसी द्वारा हुई।

## पाठ क्रमांक 10 ( देशभक्त भामाशाह )

1. भामाशाह के पिता का क्या नाम था?

भामाशाह के पिता का नाम भारमल जी था।

2. भामाशाह ने महाराणा को कितना धन दिया था ?

भामाशाह ने महाराणा को इतनी संपत्ति प्रदान कि जिससे महाराणा 20 हजार सैनिकों से 12 वर्ष तक निरन्तर युद्ध कर सकें।

3. महाराणा ने मेवाड़ त्यागने का निश्चय क्यों किया?

जब अकबर की सेना ने मेवाड़ पर अधिकार कर लिया तो महाराणा पहाड़ों और जंगलों के बीच में सुरक्षित स्थान ढूंढ कर रहने लगे ।एक दिन की बात है महारानी ने अपने भूखे बच्चों को खाने के लिए रोटी दी ,अचानक एक जंगली बिलाव उनके हाथ से रोटी छीन कर ले गया। बच्चे रोने लगे ।महाराणा से यह स्थिति देखी नहीं गई। जंगलों में छिपकर रहना और रहने के लिए मकान का न होना और न ही रोटी की व्यवस्था। वे इस परिस्थिति से ऊब चुके थे अत:उन्होंने मेवाड़ त्यागने का निश्चय किया।

4. भामाशाह के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

भामाशाह के जीवन से हमें देशभक्ति की प्रेरणा मिलती है ।उनकी सच्ची देशभक्ति ने ओसवाल जाति व जैन धर्मियों का मस्तक ऊंचा उठाया,जिन पर आज जैनों को गौरव है। भामाशाह की तरह हमें भी अपने देश और राष्ट्र के लिए तन -मन और धन से समर्पित होना चाहिए।

देश और राष्ट्र के लिए बलिदान देना गौरव की बात है।

## पाठ क्रमांक 11 ( प्रेरक प्रसंग )

1. जगडुशाह ने दुष्काल में कितनी दानशालाएं खोली थी?

दानशालाएं

2. राजा बीसलदेव को जगडुशाह ने क्या दान दिया था?

राजा बीसलदेव को जगडुशाह ने दो अमूल्य हीरे की अंगूठी दान में दी।

3. सेठ खुशहालचंद्र ने हामिद खां को अपना सर्वस्व अर्पण क्यों किया?

हामिद खां की सेना शहर में निर्दोष एवं निरपराधी लोगों को लूट रही थी, हत्या कर रही थी। चारों और अराजकता फैली हुई थी ।हामिद खां भरपूर धन प्राप्त किए बिना नरसंहार बंद नहीं करता ।इसलिए सेठ खुशहाल चंद्र ने अपने शहर को तबाही से बचाने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया ।

4. इन प्रेरक प्रसंगों से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

इन प्रेरक प्रसंगो से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने देश और समाज के लिए अपनी संपत्ति का दान देना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए ।हमारे अंदर भी सेठ खुशहालचंद्र एवं जगडुशाह जैसी जन कल्याण की वृत्ति और अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का साहस होना चाहिए।

5. जगडुशाह ने क्या सोचकर राजा बीसलदेव के हाथों में हीरे की अंगूठियां रख दी?

जगडु शाह ने राजा बीसलदेव के हाथों में हीरे की अंगूठियां ये सोचकर रख दी कि- 'ये कोई उच्च खानदान का व्यक्ति है।संकट का मारा यहां मांगने आया है तो इतना दे दिया जाए कि उसे फिर मांगने न आना पड़े।

## पाठ क्रमांक 12 ( आदर्श श्रावक रूपचंद जी सेठिया )

1. श्रावक रूपचंद जी की क्षमाशीलता का उदाहरण दीजिए?

एक बार रूपचंद जी व्याख्यान के बाद घर जा रहे थे ।रास्ते में किसी ने बिना देखे उनके सिर पर राख डाल दी ।उनके साथ ठाकुर था ।वह क्रोधित होते हुए बोला - ख्याल नहीं रखते हो ?रूपचंद जी ने कहा -'उसने जानकर राख थोड़े ही गिराई है ?कहने की कोई आवश्यकता नहीं है ।'इस प्रकार उनके प्रत्येक जीवन व्यवहार में अहिंसा व क्षमाशीलता के दर्शन होते हैं।

2. उनके जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

श्रावक रूपचंद जी के जीवन से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें भी अपना आचार और विचार शुद्ध रखना चाहिए ।उनके जीवन के गुण -आचार्यों के प्रति असीम श्रद्धा ;धर्म के प्रति असीम अनुराग; कर्तव्यों के प्रति जागरूकता ;जीवन के प्रत्येक कार्य में अहिंसा का उपयोग आदि थे ।उन गुणों को हमें भी यथासंभव अपने जीवन व्यवहार में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

3. उनके जीवन व्यवहार में धर्म साकार हो कर बोलता था ।इसे उनके जीवन के दो संस्मरण देते हुए सिद्ध कीजिए?

श्रावक रूप चंद जी का जीवन शुद्ध आचार-विचार का संगम था।तेरापंथ के श्रावकों में रूपचन्दजी का विशिष्ट स्थान था। उनके जीवन के अनेक संस्मरण है जो उनके धर्म के प्रति असीम अनुराग को दर्शाता है।

**व्यवहार में इमानदारी -**

वे बिना हक की वस्तु को कभी स्वीकार नहीं करते थे। एक बार उनका मुनीम बिना टैक्स दिए कोई वस्त्र उनके घर ले आया। जब उन्हें पता चला तो तुरंत टैक्स के रुपए भिजवाए।

**आदमी की जुबान होती है-**

एक बार किसी व्यापारी से सौदा तय हुआ। बाद में पता चला उसका काम बंद होने वाला है ।फिर भी उन्होंने उसे पैसे भिजवाए। क्योंकि उनके लिए जबान की कीमत पैसों से कहीं ज्यादा थी।

ऐसे अनेक संस्मरणों से पता चलता है कि उनके जीवन में धर्म साकार होकर बोलता था।

4. वे कौन से आचार्य के विश्वासपात्र थे?

वे आचार्य डालगणी के विश्वासपात्र थे।

## पाठ क्रमांक 13 ( इतिहास के पृष्ठ )

1. शोभजी! तुम्हें दर्शन देने के लिए हम आ गए हैँ ।यह कथन किसका और किस अवसर का है ?

यह कथन स्वामी भीखणजी का है जब वे शोभजी श्रावक को दर्शन देने के लिए कारागृह में गए।

2. उदयपुर के महाराणा ने भारमल जी स्वामी को उदयपुर से निकल जाने का आदेश क्यों दिया?

विक्रम संवत् 1875 में भारमल जी स्वामी उदयपुर पधारे ।वहाँ उनकी बढ़ती हुई प्रभावना को देख कर विरोधी लोगों ने महाराणा भीमसिंह जी के पास जा कर उन्हें बरगलाया ।नगर में कुछ ऐसे साधु आए हुए हैं जिन्होंने वर्षा को रोक रखा है।अत्यधिक गर्मी पड़ने से समस्त शहर में हैजे की सम्भावना हो रही है। तब राणाजी ने भारमल जी स्वामी को उदयपुर से निकल जाने का आदेश दे दिया।

3. जयाचार्य के वारंट की बात सुनकर दुलीचन्द जी दुगड ने क्या कहा?

दुलीचन्दजी ने कहा -किसकी मजाल है जो हमारे बैठे हमारे गुरु के प्रति कोई कार्यवाही कर सके ?जब तक मेरे शरीर मे खून की एक बूंद भी शेष है,तब तक कोई भी जयाचार्य के हाथ नहीं लगा सकता।

4. बादरमल जी भंडारी ने किचुंकी से क्या कहा ?

बादरमल जी ने किचुंकी से कहा -जाओ ,दरबार से निवेदन करो कि बादरमल आपसे मिलने आया है ! जब महाराज ने उन्हें सुबह मिलने को कहा तो बादरमल जी ने कहा -जाकर दरबार से अर्ज करो कि मिलना हो तो अभी मिल ले ,सुबह बादरमल की लाश मिल सकती है ,उसके प्राण नहीं मिलेंगे।

5. जयाचार्य पर वारंट घटना को अपने शब्दों में लिखो ।

जयाचार्य ने चूरू में जयपुर के मुनिपत नामक एक बालक को पिता के देहांत हो जाने के कारण उसकी माता की अनुमति से दीक्षित किया ।तब कुछ विरोधी लोगों ने बालक के अन्य रिश्तेदारों को उकसाया देखो जीतमल जी महाराज ने तुम लोगों से बिना पूछे ही बालक को दीक्षा दे दी। तुम्हें इसकी राज दरबार में अपील करनी चाहिए ।जयाचार्य जब चूरु से लाडनूं पधार गए तो विरोधियों के बहकावे में आकर उनके रिश्तेदारों ने जोधपुर दरबार के समक्ष अपील की। महाराज तख्तसिंह जी उनकी बातों में सहसा विश्वास करके जयाचार्य के लिए वारंट जारी कर दिया। जयाचार्य का प्रवास उस समय दुलीचंद जी दुगड़ के मकान में था ।जोधपुर नरेश द्वारा जयाचार्य के लिए वारंट की बात सुनकर वे आवेश में आ गए और उन्होंने कहा -किसकी मजाल जो हमारे बैठे हमारे गुरु के प्रति कोई कार्यवाही कर सके ?जब तक मेरे शरीर में खून की एक बूंद भी शेष है तब तक कोई भी जयाचार्य के हाथ नहीं लगा सकता ।उधर जोधपुर में बादरमल जी भंडारी जोधपुर नरेश के हजूरी दफ्तर में प्रमुख थे ।उन्हें जब पता चला तो वह तत्काल महल में महाराजा से मिलने के लिए गए और किंचुकी से कहा -जाओ दरबार से निवेदन करो कि बादरआपसे मिलने आया है ।किंचुकी ने अंदर जाकर महाराज से निवेदन किया तो महाराज ने कहा बादर मल से कह दो कि सुबह मिल लेना ।बादरमलजी से जब यह बात कही गई तो बादरमल जी ने कहा जाकर दरबार से अर्ज कर दो कि मिलना हो तो अभी मिल लो,सुबह तो बादरमल की लाश मिल सकती है, उसके प्राण नहीं मिलेंगे ।तब महाराज ने बादरमल जी से पूछा क्यों बादर आज रात्रि में कैसे आना हुआ ?तब बादरमलजी बोले कि आपने जो आदेश जीतमल जी महाराज को गिरफ्तार करने का दिया है। वह मेरे गुरु हैँ और आपने बिना वस्तुस्थिति जाने कैसे आदेश प्रदान कर दिया ?आपको दूसरा आदेश अभी जारी करना होगा। महाराज बोले सुबह दूसरा आदेश लिख देंगे ।
तो बादरजी ने कहा सुबह नहीं आपको अभी दूसरा आदेश लिखना होगा ।सुबह होगी तब तो शायद पहले वाला आदेश लाडनू पहुंच चुका होगा ।महाराज तख्तसिंह जी ने बादरजी के कहने पर तत्काल पहले वाला आदेश को खारिज कर दिया और तत्काल दूसरा आदेश जारी कर दिया। पहले वालों के लाडनूं पहुँचने से पहले ही वे लाडनू पहुंच गए।

लाडनूं समाचार मिला उसके बाद सब खुशी से झूम उठे ।इस कार्य में बादरमलजी और दुलीचन्दजी की भूमिका उल्लेखनीय रही।दोनों का नाम इतिहास में विशेष रुप से अंकित हो गया।

## पाठ क्रमांक 14 ( मैं जैन क्यों हुआ )

1. मैथ्यू को प्रभावित करने वाला जैन धर्म का कौन सा सिद्धांत था?

अहिंसा

2. मैथ्यू मैक्के के अनुसार जैन गृहस्थ के आचार की व्याख्या करें? / मैथ्यू मैक्के के अनुसार जैन गृहस्थ के आचार की व्याख्या करें?

जैन धर्म का मुख्य सिद्धांत है- अहिंसा और समता।

एक जैन गृहस्थ अपने जीवन में इन सिद्धांतों पर अमल करने के लिए कुछ बातों का पालन करता है जैसे-

हिंसा न करना ;अहिंसा का पालन करना।

झूठ नहीं बोलना;सत्य कहना।

चोरी न करना ,ईमानदारी से रहना।

व्यभिचार का सेवन न करना ;शील धर्म को पालना।

सांसारिक संपदा का मोह त्याग कर अपरिग्रही बनना।

इन व्रतों के माध्यम से एक गृहस्थ अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रही रूपी व्रतों की साधना करता है ।इन व्रतों के पालन से वह विपत्तियों से भी बचता है।

जैन गृहस्थ अपने प्रत्येक कार्य में मन, वचन और काया की शुभ प्रवृत्ति को ध्यान में रखता है ,ताकि अशुभ कर्मों का बंधन न हो। क्योंकि कर्म बंधन से मुक्त होकर ही आत्मा अपने स्वाभाविक गुण की ओर प्रस्थान करती है।

एक जैन गृहस्थ जानता है कि मुक्ति का मार्ग उसे अकेले ही तय करना है अतः वह इस संसार के क्षणभंगुरता,भोग विलास, झूठ कपट आदि से बचने का प्रयास करता है।

इस प्रकार एक जैन गृहस्थ शांतिप्रिय और धर्माराधना में लीन होकर अपना जीवन व्यतीत करता है।

3. क्या मैथ्यू मैक्के के जीवन से आपको जैन धर्म के प्रचार की प्रेरणा मिलती है?

हाँ ।मैथ्यू मैक्के के जीवन से हमें जैन धर्म के प्रचार की प्रेरणा मिलती है।

## पाठ क्रमांक 15 ( जैनों के वर्तमान संप्रदाय )

1. जैन धर्म में मुख्य कितने संप्रदाय हैं. ?

जैन धर्म में मुख्यतः दो संप्रदाय हैँ-श्वेतांबर एवं दिगंबर

2. श्वेतांबर के अनुसार दिगंबर परंपरा का प्रारंभ कब हुआ?

श्वेतांबर परंपरा के अनुसार वीर निर्वाण के 609 वर्ष पश्चात दिगंबर का प्रारंभ हुआ।

3. सचेल एवं अचेल शब्द का क्या अर्थ है ?

सचेल का अर्थ है वस्त्र सहित ।अचेल का अर्थ है वस्त्र रहित।

4. स्थानकवासी संप्रदाय का उद्भव कब हुआ?

स्थानकवासी संप्रदाय का उद्भव लोंकागच्छ से हुआ। लोंकागच्छ का उद्भव लगभग 1535 के आसपास माना जाता है।

5. तेरापंथ की क्या विशेषता है?

1.एक आचार

2.एक विचार

3.एक आचार्य

6. जैनों के वर्तमान संप्रदाय को अपने शब्दों में लिखें?

जहां विचार होता है वहां विचार भेद भी होता है। विचार भेद के कारण ही नए-नए संप्रदायों का जन्म होता है। भगवान महावीर के शासन में विचार भेद का क्रम उनकी विद्यमानता में ही हो गया था ।भगवान का शिष्य गोशालक पृथक् हो कर एक अलग संप्रदाय का आचार्य बन गया था। जमाता जमाली भी विचार भेद के कारण पृथक् हो गए ।लेकिन उन संप्रदाय का आज भी कोई अस्तित्व नहीं है । भगवान महावीर के बाद जैन संघ श्वेतांबर और दिगंबर इन दो विभागों में विभक्त हो गया ।जंबू स्वामी के पश्चात कुछ समय तक दोनों परंपराएं आचार्यों का भेद स्वीकार करती ।भद्रबाहु के समय फिर दोनों एक बन जाती है। किंतु प्रभव स्वामी के पश्चात मतभेद बढ़ने लगा। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों संप्रदाय अपने को मुख्य शाखा मान कर चलने लगे। दोनों नामों में वस्त्र को प्रधानता दी गई है ।एक वस्त्र का निषेध करती है और दूसरी वस्त्र का समर्थन। उसी आधार पर उनका नाम अचेल (वस्त्र रहित) जिनकल्प पड़ा और सचेल (वस्त्र सहित)स्थविर कल्प पड़ा ।श्वेतांबर परंपरा में मुख्यतः तीन संप्रदाय है संवेगी ,स्थानकवासी और तेरापंथी।

संवेगी-

संवेगी परंपरा मूर्ति पूजा को स्वीकार करती है ।इसमें भी खतरगच्छ, तपागच्छ ,आंचलगच्छ आदि 84 गच्छ हैं ,जिनके अलग-अलग आचार्य होते हैं।

स्थानकवासी-

स्थानकवासी परंपरा का उद्भव लोंकागच्छ से हुआ है ।जिसका उद्भव लगभग वि.सं. 1535 के आसपास माना जाता है।

लोंकाशाह 1 श्रावक थे, जिन्होंने मूर्ति पूजा को अमान्य किया । आगे चलकर विक्रम संवत 1709 में लवजी मुनि ने ढूंढीया संप्रदाय का प्रवर्तन किया । कालांतर में इस शाखा में धर्मदास जी मुनि हुए। उनके 99 शिष्य थे यही संप्रदाय आगे चलकर यही संप्रदाय स्थानकवासी संप्रदाय के रूप में प्रचलित हुआ।

**तेरापंथ-**

स्थानकवासी संप्रदाय से पृथक् हो कर आचार्य भिक्षु ने विक्रम संवत 1817 में एक नए संगठन की स्थापना की। उनके पंथ का नाम तेरा पंथ पड़ा ।जो श्वेतांबर संप्रदाय में अंतिम संप्रदाय माना जाता है ।

तेरापंथ की 3 विशेषताएं हैं-

एक आचार

एक विचार

एक आचार्य

यह एक अनूठा संगठन है।

**दिगंबर परंपरा-**

श्वेतांबर की तरह दिगंबर वालों मे भी कई शाखाएं हैं । बीस पंथ, बाईस पंथ ,तेरापंथ , तारणपंथ आदि। उनमें तारणपंथ का उदय विक्रम संवत् 1505 से 1573 के आसपास माना जाता है। इस पंथ का ज्यादा प्रसार नहीं हो सका ।मध्य भारत में बहुत थोड़े लोग इसको मानने वाले हैं ।दिगंबर परंपरा श्वेतांबर आगमो को प्रमाण न मान कर आचार्य कुंदकुंद के ग्रंथों को प्रमाण मानती है।

## पाठ क्रमांक 16 ( जैन कला )

1. भारतीय मूर्ति कला की मुख्य धाराओं के नाम लिखो?

भारतीय मूर्तिकला की मुख्य तीन धाराएं हैं

1.गांधार कला,

2.मथुरा कला,

3.अमरावती कला

2. तेरापंथ के मुनियों ने एक पन्ने में कितने अक्षर लिखे?

तेरापंथ के मुनियों ने 4 इंच चौड़े व 9 इंच लंबे पन्ने में 2000 श्लोक (80000) अक्षर लिखे।

3. एलोरा की गुफाओं में जैन गुफाएं कितनी है?

एलोरा की गुफाओं में 30- 40 गुफाएं हैं।

4. विश्व में सबसे ऊंची मूर्ति कौनसी है?

मध्य प्रदेश के बड़वानी गांव में भगवान ऋषभदेव की 84 फुट ऊंची मूर्ति विश्व में ऊँची मूर्ति मानी जाती है।

5. जैन स्थापत्य कला के बारे मैं बताओ।

जैन परम्परा में भगवान ऋषभदेव ने पुरुषों के लिए 72 व स्त्रियों के लिए 64 कलाओं का निरूपण किया।इसमें एक मुख्य कला है -स्थापत्य कला।

जैन स्थापत्य कला के सर्वाधिक प्राचीन अवशेष उदयगिरि,खण्डगिरि और जूनागढ़ की गुफाओं में मिलते हैँ।स्थापत्य कला की दृष्टि से एलोरा की गुफाएं भी महत्त्वपूर्ण है।

मौर्य और शुंगकाल के पश्चात भारतीय मूर्ति कला की मुख्य 3 धाराएं है।

1.गांधार कला

2.मथुरा कला

3.अमरावती कला

मूर्ति कला की दृष्टि से श्रवणबेलगोला(कर्णाटक) में भगवान बाहुबली की 57 फुट ऊँची मूर्ति संसार की अद्भुत कलाकृति है।विश्व की सबसे ऊँची 84 फ़ुट भगवान ऋषभ की मूर्ति मध्यप्रदेश के बड़वानी गांव में है जो विश्व को जैन मूर्तिकला की अनुपम देन है।

## पाठ क्रमांक 17 ( स्याद्वाद दर्शन )

1. स्याद्वाद का क्या अर्थ है?

स्यादवाद के स्यात् पद का अर्थ है अपेक्षा या दृष्टिकोण और वाद का अर्थ है प्रतिपादन या सिद्धांत। इस प्रकार स्याद्वाद का अर्थ है -किसी वस्तु धर्म गुण या घटना आदि का किसी अपेक्षा से कथन करना स्याद्वाद है।

2. सत्-असत् से तुम क्या समझते हो?

स्याद्वाद के मतानुसार प्रत्येक पदार्थ स्व द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से सत् है और पर द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की अपेक्षा से असत् है। जैसे एक घड़ा स्व द्रव्य मिट्टी की अपेक्षा से सत् है और पर द्रव्य वस्त्र आदि उतर वस्तुओं की अपेक्षा से असत् है ।अर्थात् घड़ा है वस्त्र नहीं। द्रव्य के समान ही किसी बात की सत्यता में क्षेत्र की अपेक्षा रहती है जैसे भगवान महावीर का निर्वाण पावा में हुआ, क्षेत्र की अपेक्षा से यह सत्य है पर इसके स्थान पर यदि कहा जाए भगवान का जन्म

राजगृह में हुआ तो यह बात असत्य हो जाती है ।इसी प्रकार पदार्थ की सत्ता और असता बनाने  के लिए काल और भाव की अपेक्षा रहती है।

3. स्याद्वाद के सिद्धांत से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

स्याद्वाद के सिद्धांत से हमें यह शिक्षा मिलती है हमें अपने जीवन में सामंजस्य रखने ,आपसी तालमेल और विरोधाभास को मिटाने के लिए स्याद्वाद के सिद्धांत को महत्व देना चाहिए ।ताकि हम अपने विचारों को उन्नत बना सके ।एकांकी विचार अपूर्ण और वास्तविकता से दूर होता है जबकि सर्वांगीण विचार पूर्ण और वास्तविक होता है।

## पाठ क्रमांक 18 ( जैन मुनि की चर्या )

1. दीक्षा कब ली जाती है?

जब व्यक्ति के मन में दु:ख मुक्ति की भावना जागृत होती है तब वह संसार से विमुख हो जाता है। उसका वैराग्य जब चरम बिंदु पर पहुंचता है तब वह सांसारिक बंधनों और परिचयों को तोड़कर दीक्षा ग्रहण करता है।

2. जैन दीक्षा सावधिक होती है या निरवधिक?

जैन दीक्षा निरवधिक यानी जीवनपर्यंत होती है।

3. पांच महाव्रतों के नाम बताओ?

पांच महाव्रत-
अहिंसा महाव्रत
सत्य महाव्रत
अचौर्य महाव्रत
ब्रह्मचर्य महाव्रत
अपरिग्रह महाव्रत

4. समिति और गुप्ति में क्या अंतर है?

समिति का अर्थ है- सम्यक् प्रवृत्ति
गुप्ति  का अर्थ है -गोपन संयम

5. अपरिग्रह का क्या अर्थ है?

अपरिग्रह अर्थात् अममत्व भाव और असंग्रह

6. जैन मुनि की दिनचर्या के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें?

जैन मुनि का उद्देश्य होता है -स्व कल्याण।
वे स्वकल्याण के साथ- साथ पर कल्याण के लिए हजारों मील की पैदल यात्रा करते हैं ।
जैन मुनियों की दिनचर्या

जैन मुनि को 5 महाव्रतों(अहिंसा,सत्य,अस्तेय,ब्रह्मचर्य,अपरिग्रह)के साथ 5 समिति और 3 गुप्ति का पालन करना होता है।

•प्रातः लगभग 4:00 बजे उठकर सूर्योदय से एक मुहूर्त पूर्व प्रतिक्रमण करना एवं अपने पास रहे सभी वस्त्र पात्र आदि का प्रतिलेखन करना।

शौच से निवृत होकर अध्ययन-अध्यापन करना एवं प्रवचन देना फिर गोचरी करना।

भोजन के बाद विश्राम कर के पठन- पाठन ;धर्म चर्चा आदि दोपहर में करना ।

तीन प्रहर दिन के बाद पुनः प्रतिलेखन करके गोचरी जाना।

सूर्यास्त से पूर्व भोजन  पानी से निवृत्त होना।

सूर्यास्त के पश्चात गुरु वंदना कर प्रतिक्रमण करना ।

स्वाध्याय-ध्यान करना व जिज्ञासु भाई बहन को धर्म समझाना, प्रवचन करना।

प्रहर रात्रि के बाद सो जाना।

यह जैन मुनियों की सामान्य दिनचर्या है।

कुछ मुनि अपना अधिकांश समय तप ,जप, ध्यान ,स्वाध्याय या धर्म चर्चा में व्यतीत करते हैं।

7. 5 समितियों का विवेचन करें।

तेरापंथ में 5 समितियों का विवेचन किया जाता है ।

1.ईर्या समिति:-देख कर चलना ।अर्थात् चलने-फिरने, उठने - बैठने में संयम का पालन करना।

2.भाषा समिति-विचारपूर्वक निरवद्य बोलना। अर्थात् विवेकपूर्ण बोलना, कठोर वचन न कहना, अपमानजनक शब्द न बोलना, व्यंग्य न कसना, मर्मकारी या हिंसात्मक भाषा का प्रयोग न करना ।

3.एषणा समिति:- शुद्ध आहार पानी की गवेषणा करना।अर्थात् भिक्षा संबंधी दोषों का वर्जन करना।

4.आदान निक्षेप समिति:-वस्त्र आदि उपकरणों को सावधानी से लेना और रखना। अर्थात् अपने निश्राय में स्थित सभी प्रकार के वस्त्र, पात्र, पुस्तके या अन्य छोटे-मोटे उपकरणों को रखने, उठाने या उपयोग में लाते समय पूर्व सावधानी बरतना,हिंसा से बचना।

5.उत्सर्ग समिति:- मल मूत्र के उत्सर्ग में पूर्ण विवेक और सावधानी बरतना।

## पाठ क्रमांक 19 ( रात्रि भोजन और जैन धर्म )

1. रात्रि भोजन की हानियां बताओ?

जीवन निर्वाह के लिए भोजन करना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक है हमारा भोजन शुद्ध सात्विक पवित्र और स्वच्छ होना चाहिए।
जैन धर्म में रात्रि भोजन के निषेध पर बहुत जोर दिया गया है ।

• रात्रि में भोजन करने से जैन धर्म में हिंसा का दोष बताया गया है। बहुत से सूक्ष्म और छोटे जीव जो रात्रि में दृष्टिगोचर नहीं होते हैं वह भोजन के साथ हमारे पेट में पहुंचकर बहुत नुकसान पहुंचाते हैं।

• इसी प्रकार दीपक, गैस और बिजली आदि के प्रकाश सूर्य के प्रकाश जैसे सार्वत्रिक अखंड उज्जवल और आरोग्य प्रद नहीं है।

• शरीर शास्त्र के ज्ञाता भी रात्रि भोजन को बल बुद्धि और आयु के लिए हानिकारक बताते हैं ।

• रात्रि मे हृदय और नाभि कमल संकुचित हो जाते हैं ।अतः भोजन का परिपाक अच्छी तरह नहीं हो पाता ।

• रात्रि भोजन के कारण हजारों दुर्घटनाएं होती है ।

• भोजन और पेय पदार्थों के साथ विषैले जीव जंतु गिर जाने के कारण अनेक लोग अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं ।

इस प्रकार रात्रि भोजन सब प्रकार से त्याज्य है।

2. रात्रि भोजन करने से पाप किस प्रकार लगता है?

रात्रि भोजन करने से सूक्ष्म जीव भोजन में गिरकर हमारे दांतो के नीचे पिस जाते हैं। जीवों की हिंसा करना बहुत बड़ा पाप है।

3. रात्रि के समय बिजली आदि के तेज प्रकाश में भोजन करने से दोष लगता है क्या? यदि लगता है तो क्यों और कैसे?

दीपक ,बिजली आदि के द्वारा हिंसा से नहीं बचा जा सकता ।अतः भोजन करने में दोष लगता है। दीपक,गैस,बिजलीऔर चंद्रमा आदि के प्रकाश सूर्य के प्रकाश जैसे आरोग्यप्रद नहीं होते।जीव रक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से सूर्य का प्रकाश ही सबसे अधिक उपयोगी है।अधिक गर्मी और बरसात के दिनों में इधर उधर से कितने जीव जंतु एकत्रित हो जाते हैं भोजन करते समय उन से बचना बहुत कठिन हो जाता है।इसलिए रात्रि के समय भोजन करने से होने वाले सूक्ष्म जीवों की हिंसा से नहीं बचा जा सकता।

4. महात्मा गांधी ने कितने वर्ष रात्रि भोजन नहीं किया?

महात्मा गांधी ने 40 वर्ष से जीवनपर्यंत रात्रि भोजन नहीं किया

5. रात्रि भोजन एवं जैन धर्म के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें।

रात्रि भोजन एवं जैन धर्म का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। एक समय ऐसा था रात्रि भोजन न करना जैनों की विशिष्ट पहचान थी जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है जो अपने नियमों को पूर्ण रूप से प्रमाणित करता है। जैन धर्म के अनुसार रात्रि भोजन करने से हिंसा का दोष लगता है। अत्यंत सूक्ष्म एवं छोटे जीव हमें सूर्यास्त के पश्चात दिखाई नहीं देते रात्रि में भोजन करते समय यह हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। जीव रक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से सूर्य का प्रकाश ही सर्वाधिक उपयोगी है। भोजन का कार्य जल्दी समाप्त कर सांय काल का समय धर्म श्रवण, शास्त्र पठन, तत्व चर्चा सामायिक, विश्राम आदि अनान्य कार्यों के लिए रखा जा सकता है। रात्रि भोजन त्याग से निद्रा अच्छी आती है, ब्रह्मचर्य पालन मे सहायता मिलती है ,चित प्रसन्न एवं आरोग्य प्रदान करने वाला होता है। रात्रि में हृदय और नाभि कमल संकुचित हो जाते हैं और पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है रात्रि में भोजन पकाते समय भी अंधकार मैं जीव हिंसा की संभावना अधिक होती है जिससे कुछ दुर्घटनाएं भी हो सकती है हमें रात्रि भोजन से बचना चाहिए जिससे मन प्रसन्न एवं तन निरोग रहे साथ ही साथ धर्म आराधना का भी लाभ मिल सके।

## पाठ क्रमांक 20 ( मांसाहार से होने वाली हानियां )

1. मांसाहार की हानियां अपने शब्दों में बताओ?

मांसाहार मनुष्य के कोमल हृदय एवं भावनाओं को नष्ट कर उसे पूर्णतया निर्दयीऔर कठोर बना देता है।

मांसाहार मनुष्य का प्राकृतिक भोजन नहीं है। वह तामसिक आहार है। जिससे मनुष्य की सात्विक कृतियों को आघात लगता है।

मांसाहार से विचारधारा शुद्ध नहीं रह पाती।

इसके अतिरिक्त मांसाहार से बल और शक्ति भी प्राप्त नहीं होती जो दूध और फलाहार से प्राप्त होती है।

मांस मे तत्काल अनेक जीवों की उत्पत्ति हो जाती है। जिससे अनेक बीमारियां उत्पन्न होने की संभावना रहती है। मांसाहार उन भयानक रोगों के कारणों में एक प्रमुख कारण है जिसका आज 99 प्रतिशत प्रसार हो रहा है।

जहां एक ओर यह अध्यात्म और धर्म के विरूद्ध उदाहरण है वहीं सामिष भोजन नैतिकता की दृष्टि से भी अनुचित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 160 ऐसी बिमारियों के नाम घोषित किए जो मांसाहार से फैलती है। और डा मूर के अनुसार मांसाहार से हृदय का क्रियाकलाप बढ जाता है। इसी प्रकार रक्तचाप ,आर्टरी की कठोरता और गुर्दे के रोगियों के लिए भी मांसाहार हानिकारक है।

2. क्या मांसाहार  मनुष्य के लिए आवश्यक और अनिवार्य है?

नहीं मांसाहार मनुष्य के लिए आवश्यक और अनिवार्य नहीं है । शाकाहारी भोजन ही स्वास्थ्यवर्धक और पौष्टिक होता है।

3. क्या वनस्पतिआहार में भी मांस भक्षण का दोष आता है?

जो सप्त धातु युक्त कलेवर होता है, उस को ही मांस की संज्ञा दी गई है ।वनस्पति में सप्तधातु नहीं पाई जाती अतः उसमे मांस भक्षण का दोष नहीं आता।

4. पश्चिमी वैज्ञानिक विद्वानों का मत मांसाहारी संबंध में क्या है?

पश्चिमी डॉक्टरो के एक बड़े समुदाय का यह दृढ मत है कि मानव शरीर की रचना पर विचार करने से यह सिद्ध होता है कि वह शाकाहारी ही है । यूरोप और अमेरिका मे अनेक समितियां स्थापित हो गई है जो मांसाहार का पूर्ण रुप से डटकर विरोध करती है और शाकाहार का प्रसार करती है। वैज्ञानिक दृष्टि से मांसाहार का पूर्णतः निषेध कर शाकाहार का प्रचार कर रही है । प्रसिद्ध डॉक्टर जोशिया ओल्डफील्ड का कथन है कि आज के विज्ञान द्वारा यह निर्णय हो गया है कि मनुष्य की गणना मांसाहारियों में नहीं बल्कि शाकाहारियों में है। गेहूं चने चावल आदि अन्न तथा सब्जियों और फलों में वह सब कुछ है जो मनुष्य के पूर्ण भोजन में जीवन को स्थिर रखने के लिए आवश्यक है । कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के एक अन्य प्रोफेसर ने अपने भाषण में कहा की पूर्ण स्वास्थ्य संपन्न जीवन व्यतीत करने के लिए मांस बिल्कुल अनावश्यक है । शाकाहार पर निर्भर रहकर ही हम स्वस्थ जीवन बिता सकते हैं।

## पाठ क्रमांक 21  (  मादक द्रव्य और नशीली वस्तुए  )

1. नशीली वस्तुएं कौन-कौन सी है?

चाय ,कहवा, कोका, अफीम ,कोकीन ,सुल्फा गांजा ,चण्डू, सिगरेट ,बीड़ी, हुक्का ,सिगार, गुटखा आदि अनेक नशीले पदार्थ है।

2. तंबाकू और शराब में कौन सा विषैला पदार्थ होता है?

तंबाकू में निकोटीन और शराब में अल्कोहल होता है।

3. क्या तंबाकू और शराब के सेवन से हमारा देश निर्बल बन रहा है?

हां तम्बाकू और शराब के सेवन से हमारा देश निर्बल बन रहा है।जब देश के शिक्षित व्यक्ति मादक पदार्थों के उपासक बने हुए हैं तो उस देश की रक्षा कौन करेगा?जिस देश के निवासी के पास न तन ढकने को वस्त्र है ना पेट भरने के लिए अन्न है फिर भी मादक पदार्थों के सेवन में तल्लीन है वह देश  सबल कैसे बन सकता है?

4. तंबाकू पीने से कितने रोगों की उत्पत्ति होती है?

तंबाकू पीने से मनुष्य रोगों का केंद्र बन जाता है।पित्त ,कफ, वायु दूषित हो कर नेत्र ज्योति, पाचन शक्ति और पुंसत्व का ह्रास होता है ।दांतों की कांति जाती है। मुंह और छाती आदि अंग तंबाकू के भयंकर विष से निर्बल होकर खांसी, दमा, तपेदिक आदि रोग उत्पन्न होने की संभावना रहती है।

## पाठ क्रमांक 22 ( प्रेक्षा ध्यान आधार और स्वरुप )

1. उपसंपदा की क्रियान्विति की पांच चर्या का उल्लेख करें?

1.भाव क्रिया

2.प्रतिक्रिया विरति

3.मैत्री

4.मिताहार

5.मित भाषण।

2. प्रेक्षा ध्यान का सूत्र क्या है?

प्रेक्षा ध्यान का सूत्र है- संपिक्खए अप्पगमप्पएणं- आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना।

3. प्रेक्षा ध्यान का अर्थ क्या है?

प्रेक्षा शब्द दो शब्दों से बना है- प्र+ ईक्षा। ईक्षा शब्द का अर्थ है- देखना । इसके साथ जब प्र का उपसर्ग लगता है तो वह प्रेक्षा बनता है । प्रेक्षा का अर्थ- गहराई से देखना।

4. कायोत्सर्ग किसे कहते हैं?

तनाव विसर्जन की प्रक्रिया का नाम है- कायोत्सर्ग।शरीर की स्थिरता, शिथिलता तथा मानसिक जागरूकता की स्थिति का नाम कायोत्सर्ग है। स्वस्थ रहने के लिए इस प्रक्रिया को सीखना महत्त्वपूर्ण है।

5. प्रेक्षा ध्यान पर विस्तार से प्रकाश डाले?

प्रेक्षा शब्द दो शब्दों से बना है। प्र + ईक्षा। ईक्षा शब्द का अर्थ है देखना। इसके साथ जब प्र का उपसर्ग लगता है तो वह प्रेक्षा बनता है। प्रेक्षा का अर्थ है गहराई से देखना।

प्रेक्षा ध्यान का सूत्र है - संपिक्खए अप्पगमप्पएणं।

आत्मा से आत्मा को देखो। स्थूल आत्मा के द्वारा सूक्ष्म आत्मा को देखना। देखना ध्यान का मूल तत्व है इसलिए इस ध्यान पद्धति का नाम प्रेक्षा ध्यान रखा गया है। शुद्ध चेतना से व्यक्ति जान सकता है देख सकता है।

आत्मा के द्वारा आत्मा को देखे। इस प्रक्रिया की शुरुआत शरीर को देखने के द्वारा होती है। और फिर चित को केंद्रित कर हम शरीर के प्रकमप्रो को देखते हुए सूक्ष्म आत्मा तक पहुंचे।

**ध्येय**

चित को निर्मल बनाना हमारा लक्ष्य है। प्रेक्षा ध्यान के द्वारा चित्त की निर्मलता संभव है। चित्त की निर्मलता से हमे आनंद एवं शांति की अनुभूति होगी। परंतु प्रेक्षाध्यान का मूल ध्येय केवल आनंद की प्राप्ति नही बल्कि चित्त की निर्मलता है।

**उपसम्पदा**

चित्त की निर्मलता के लिए जो प्रतिज्ञा लेते है वह है उपसम्पदा। व्यक्ति को पूरे ध्यान काल में इन प्रतिज्ञाओं का पालन करना पड़ता है। उपसम्पदाये 5 है - भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार, मितभाषण।

ध्यान की सफलता के लिए एकाग्रता आवश्यक है। जब तक व्यक्ति अपने ध्येय के प्रति एकाग्र नही होगा वह चित की निर्मलता नही प्राप्त कर सकेगा।

ध्यान का स्वरूप है - अप्रमाद एवं चैतन्य का जागरण। चैतन्य की जागरूकता के लिए व्यक्ति को अपने अस्तित्व के प्रति अप्रमत्त होना होगा। प्रमादी व्यक्ति को सभी ओर से भय रहता है।

प्रेक्षा ध्यान के मुख्य अंग

**कायोत्सर्ग**

तनाव विसर्जन की प्रक्रिया है।शरीर की स्थिरता, शिथिलता एवं तनाव मुक्त प्रक्रिया

**श्वास प्रेक्षा**

श्वास को चित्त के साथ केंद्रित कर उसके भीतर एवं बाहर की प्रक्रिया को देखे।

**शरीर प्रेक्षा**

शरीर के हर अवयव को देखे एवं वहा हो रहे प्रकमप्रो को देखे।

**अर्हम ध्वनि**

यह बीज मंत्र है एवं

प्रेक्षा ध्यान इसी मंत्र के उच्चारण से प्रारंभ होता है।

6. प्रेक्षाध्यान अनेक व्यावहारिक प्रयोजनों की पूर्ति करता है वे क्या है?

प्रेक्षाध्यान जिन व्यवहारिक प्रयोजनों की पूर्ति करता है वे निम्न है-

बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन।

कार्य कौशल में वृद्धि।

मन:कायिक रोगों से मुक्ति।

मानसिक और भावनात्मक तनाव का विसर्जन।

अनुशासन का विकास।

सहिष्णुता का विकास।

एकाग्रता में वृद्धि।

मैत्री भाव का विकास।
संकल्प शक्ति का विकास।
आत्म शक्ति का जागरण।
अंतर्दृष्टि का विकास।

## पाठ क्रमांक 23 ( कायोत्सर्ग )

1. कायोत्सर्ग का क्या अर्थ है?

शरीर की स्थिरता शिथिलता और शरीर के प्रत्येक अवयव के प्रति पूरी जागरूकता ही कायोत्सर्ग है । शरीर के प्रति ममत्व का विसर्जन और तनाव का विसर्जन कायोत्सर्ग कहलाता है।

2. तनाव के क्या कारण है?

तनाव का मुख्य कारण है- क्रोध। सामान्य जीवन धारा को अस्त-व्यस्त कर देना तनाव का कारण है। मनुष्य के मानस में पैदा होने वाली ईर्ष्या प्रतिस्पर्धा घृणा या भय के भाव संपत्ति के लिए संघर्ष लालसा और वहम भी तनाव उत्पन्न करते हैं।

3. तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न होने पर शरीर के कुछ अंग सक्रिय होते हैं वह कौन-कौन से हैं?

तनाव की स्थिति में क्रोध से चेहरा लाल होना और मुखाकृति बदलना ।
अन्य प्रभाव

**हाइपोथेलेमस:-**

यह हमारे मस्तिष्क का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है । सामान्य रूप से चेतन मन के द्वारा जिन क्रियाओं का नियंत्रण नहीं होता उन सभी क्रियाओं का संयोजन हाइपोथेलेमस करता है।

**पीयूष ग्रंथि:-**

अंतः स्त्रावी की प्रधान ग्रंथि है। यह अन्य ग्रंथियों का नियमन करती है।

**एड्रीनल:-**

यह एड्रीनालीन एवं अन्य हार्मोन का स्राव करती है जिनसे व्यक्ति तनावयुक्त एवं सावधान होता है।

**स्वायत्त नाड़ी संस्थान का अनुकंपी भाग:-**

यह विपत्ति की स्थिति में व्यक्ति को आक्रमण के लिए या भागने के लिए प्रेरित करती है।

4. कायोत्सर्ग कैसे करें?

कायोत्सर्ग तीन प्रकार के हैं उत्थित कायोत्सर्ग (खड़े होकर) स्थित कायोत्सर्ग (बैठकर) सुप्त कायोत्सर्ग (लेटकर) ।लेटकर
कायोत्सर्ग करने में सुविधा होती है ।कंबल के ऊपर सीधा लेट कर पैरों को फैला कर एड़ियों के बीच 12 इंच की दूरी रहे । हथेलियाँ आकाश की ओर खुली रहे । आँखें कोमलता से बंद रहे व सिर के नीचे तौलिया या चादर को टिका लें। श्वास मंद व शांत ले । जब श्वास ले तो पेट फूले व छोड़े तो पेट सिकुड़े। शरीर के प्रत्येक

भाग को शिथिल होने का सुझाव दें। जब सारा शरीर शिथिल हो जाए तब तनावमुक्त स्थिति का अनुभव होगा। कायोत्सर्ग का यह प्रयोग पूरा होने पर सभी मांसपेशियों व नाड़ियों को वापस सक्रिय होने का आदेश दें। दीर्घ श्वास का प्रयोग करते हुए प्रत्येक अंग को सक्रियता का सुझाव दें ।इस प्रकार कायोत्सर्ग की प्रक्रिया पूरी होती है।

5. तनाव से होने वाली शारीरिक स्थितियों का वर्णन करो?

तनाव से उत्पन्न होने वाली शारीरिक स्थिति-

सामान्य मनुष्य को जब क्रोध आता है तो उसकी मुखाकृति बदल जाती है,चेहरा लाल हो जाता है।

आधुनिक मनुष्य के मानस में पैदा होने वाली ईर्ष्या, घृणा,प्रतिस्पर्धा या भय के भाव ,लालसाएं,बहम भी दबाव तंत्र को प्रवर्तित कर देते हैं जिससे शारीरिक स्थिति में परिवर्तन आता है।

पाचन क्रिया मंद या स्थगित हो जाती है।

लार ग्रंथियों के कार्य -स्थगन से मुंह सुख जाता है।

चयापचय की क्रिया में तेजी

श्वास तेजी से चलने लगता है।

रक्त में शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है।

रक्तचाप बढ़ जाता है।

6. दबाव तंत्र की संख्या व नाम लिखें?

दबाव तंत्र की संख्या 4 हैं उनके नाम निम्न है-

हाइपोथेलेमस (अवचेतक)

पीयूष ग्रंथि

एड्रीनल (अधिवृक्क)

स्वायत्त नाड़ी संस्थान का अनुकंपी भाग।

## पाठ क्रमांक 24 ( श्वास प्रेक्षा )

1. श्वसन प्रक्रिया से आप क्या समझते हैं?

श्वास की क्रिया नाक से प्रारंभ होती है और फेफड़ों में समाप्त होती है लेकिन इस प्रक्रिया में हृदय का भी योगदान रहता है । रक्त परिसंचरण द्वारा ऑक्सीजन को पूरे शरीर में पहुंचाया जाता है तथा कार्बन डाइऑक्साइड गैस को वापस फेफड़ों में पहुंचाया जाता है। रक्त परिसंचरण की क्रिया हृदय के माध्यम से होती है । श्वास लेते समय पेट फूलना चाहिए श्वास छोड़ते समय पेट सिकुड़ना चाहिए।

श्वसन प्रक्रिया में तनपुट, अंतर्पर्शुकीय मांसपेशी तथा हंसली की मांसपेशियों का सक्रिय रुप से योगदान मिलता है।

## 2. दीर्घ श्वास से आप क्या समझते हैं?

श्वास दो प्रकार का होता है- सहज और प्रयत्न जनित। छोटे श्वास को दीर्घ बनाया जा सकता है । साधना करने के लिए प्राण शक्ति की प्रचुरता अपेक्षित होती है। प्राण शक्ति जितनी सशक्त होगी। उतनी ही हमारी साधना सफल होगी। अतः हमें दीर्घ श्वास का अभ्यास करना चाहिए।

सामान्य व्यक्ति एक मिनट मे 15- 17 श्वास लेता है। अभ्यास के द्वारा इस संख्या को कम किया जा सकता है । दीर्घ श्वास प्रेक्षा के द्वारा वृत्तियों का शमन, उत्तेजनाओं का शमन और वासनाओं का शमन किया जाता है । इसके अतिरिक दीर्घ श्वास से शारीरिक और मानसिक लाभ भी प्राप्त होता है।

## 3. समवृत्ति श्वास किसे कहते हैं?

समवृत्ति श्वास प्रेक्षा शक्ति जागरण का महत्त्वपूर्ण सूत्र है। इसमें श्वास की दिशा में परिवर्तन लाया जाता है। एक नथुने से श्वास भीतर लेकर दूसरे नथुने से बाहर निकाला जाता है तथा फिर पुनः उसी से भीतर लेकर दूसरे नथुने से श्वास बाहर निकाला जाता है । एक बार जितना समय सांस लेने और छोड़ने में लगे प्रत्येक आवृत्ति में उतना ही समय लगाना चाहिए । यह परिवर्तन संकल्प शक्ति के द्वारा निष्पन्न होता है।

समवृत्ति श्वास प्रेक्षा से नाड़ी संस्थान का शोधन होता है । ज्ञान शक्ति का विकास होता है। और अतीन्द्रिय ज्ञान की संभावनाओं का द्वार खुलता है। दूर-बोध की उपलब्धि इससे संभव हो सकती है।

## 4. मंद व लंबे श्वास से होने वाले शरीर के फायदे बताओ?

मंद श्वास से शरीर को निम्न फायदे होते हैं-

- शरीर की टूट फूट की गति बंद हो जाती है।
- हृदय के कार्य भार में कमी हो जाती है।
- रक्तचाप में अनावश्यक वृद्धि रुक जाती है।
- स्नायविक शांति प्राप्त होती है।

दीर्घ श्वास से शरीर को निम्न फायदे होते हैं-

- जब श्वास को लंबा करते हैं तो आने जाने वाली उत्तेजना लौट जाती है।
- इसके द्वारा व्यक्ति वासनाओं का शमन, वृत्तियों का शमन कर सकता है।
- शारीरिक व मानसिक लाभ प्राप्त किया जाता है।